छठी झलक

दक्षिण अफ्रीका में बैरिस्टर गांधी का पुनरागमन

XUJ53L

गांधी जी स्वदेश में कठिनाई से छह महीने ही बिता पाए थे कि नैटाल से उन्हें दक्षिण अफ्रीका लौटने का तार मिला। अन्याय के विरुद्ध विद्रोह की जो आग वे सुलगा आए थे, वह धीरे–धीरे प्रज्ज्वलित हो रही थी। उसे नियंत्रण में रखने के लिए सुलगाने वाले की आवश्यकता आ पड़ी थी ।

सेठ अब्दुल्ला ने 'कुरलैंड' नामक जहाज खरीदा था । उसी पर उन्होंने गांधी जी को सपरिवार, बिना किराया दिए, आने का आग्रह किया। गांधी जी ने सेठ के आग्रह को स्वीकार कर अपनी पत्नी और दोनों बच्चों के साथ डर्बन की ओर प्रस्थान कर दिया। उनके साथ–साथ दूसरा जहाज नादरी भी भारतीय कुलियों और व्यापारियों को लेकर नैटाल की ओर चला।

गांधी जी तो यूरोपीय पोशाक में रहते थे, उन्होंने अपनी पत्नी और बच्चों को भी विशेष पोशाक पहनने का आदेश दिया, जिससे वे गोरों द्वारा अपमानित न हो पाएँ। पारसियों की पोशाक यूरोपीय पोशाक के समान ही लगती है। अतः उन्होंने कस्तूरबा को पारसी महिलाओं के समान वस्त्र पहनने को कहा और बच्चों को कोट, पेंट, बूट और मोजे पहनाए। बच्चों ने बूट कभी पहने नहीं थे, इसलिए उनके पैरों में छाले पड़ गए। गांधी जी ने उन्हें छुरी काँटे से भी खाना सिखलाया। इससे कस्तूर बा को बड़ा अटपटा लगा, परन्तु जिद्दी पति परायण पत्नी विवश थी। समर्पण में ही उसे सुख मिलता था।

जहाज सेठ अब्दुल्ला का था। इससे वह मुंबई से सीधे डर्बन रवाना हो गया। मार्ग में उसे भयंकर तूफान का सामना करना पड़ा। जहाज कई बार ऊँची लहरों के कारण बुरी तरह डगमगाता था और यात्री घबराकर चिल्लाते थे। गांधी जी सबको सांत्वना देते और परमात्मा से प्रार्थना करते थे । तूफान से बचकर जहाज ने डर्बन बंदरगाह पर लंगर डाल दिया ।

'गंदा गांधी, वापस जा'

बंदरगाह पर गोरे बड़ी संख्या में इकट्ठे थे और 'गंदा गांधी वापस जा' के नारे लगा रहे थे । नैटाल के गोरों ने पहले गांधी जी को डर्बन में प्रविष्ट न होने देने का निश्चय कर लिया था। जब उन्होंने दो जहाजों को डर्बन बंदरगाह पर देखा तो उन्हें ऐसा लगा कि गांधी उनके खिलाफ आंदोलन करने के लिए दो जहाजों में कुली भरकर लाया है। उन्होंने दोनों जहाजों के भारतीयों को तुरंत लौट जाने का नारा लगाया । वे धमकाकर कहने लगे कि अगर किसी कुली ने उतरने की कोशिश की तो उसे समुद्र में फैंक दिया जाएगा। गांधी जी यात्रियों को शांत रहने का ढाढ़स बँधाते थे। उन्होंने यह भी कहा कि यदि तुम्हें अपने प्राण प्यारे हों तो स्वदेश लौट सकते हो। हो सकता है, उतरने पर मौत के मुँह में झोंक दिए जाओ। सभी भारतीयों ने डर्बन बंदरगाह पर उतरने के अपने अधिकार को न त्यागने का निर्णय लिया। उन्होंने गांधी जी से कहा कि हम गोरों की गीदड़ भभकियों से नही डरेंगे ।

जहाज के बंदरगाह पर पहुँचते ही डॉक्टरों ने यात्रियों की जाँच की। कोई यात्री बीमार नहीं था। फिर जहाज चूँकि मुंबई (बंबई) से आ रहा था, और वहाँ प्लेग की बीमारी थी, इसलिए यही बहाना लेकर जहाज को 23 दिन तक बंदरगाह पर अलग रखा गया और भारतीयों को प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी गई। डॉक्टरी मत से प्लेग के कीटाणु 23 दिन तक कायम रहते हैं। यह आदेश आरोग्य की दृष्टि से नहीं लिया गया था, गोरों के विरोध आंदोलन के कारण लिया गया था। भारतीयों को वापस भगाने की यह एक चाल थी। डर्बन के गोरे बड़ी–बड़ी सभाएँ कर रहे थे। सेठ अब्दुल्ला को डराया–धमकाया जाता था, लालच भी दिया जाता था, परन्तु सेठ धमकियों से डरने वाले नहीं थे । 23 दिन का निर्धारित समय बीत जाने पर डर्बन के भारतीय और उनके वकील, मिस्टर लाटेन, जहाज पर आए और भारतीयों को उतरने के लिए प्रोत्साहन देने लगे । यात्री उतरने लगे, परन्तु गांधी जी को सरकार ने संध्या तक न उतरने की सलाह दी, क्योंकि गोरे बहुत उग्र हो रहे थे। सरकार को उनके प्राणों का भय था। गांधी जी ने संध्या को उतरना स्वीकार कर लिया, परन्तु एडव्होकेट मिस्टर लाटेन उन्हें अपनी जिम्मेदारी पर दिन में ही ले जाने पर उद्यत हो गए। जहाज के कप्तान से विदा लेकर गांधी जी मिस्टर लाटेन के साथ अपने मित्र रुस्तम जी के मकान की ओर चलने लगे। गोरे लड़कों ने उन्हें पहचानकर 'गांधी–गांधी' की आवाज़ें लगाईं । गोरों की भीड़ जमा हो गई। मिस्टर लाटेन ने जो बैठने के लिए रिक्शा मँगाया था, उसे लड़कों ने भगा दिया। गांधी जी भीड़ में फँस गए। लाटेन उनसे अलग हो गए । गांधी जी ने जहाज से रवाना होने के पूर्व अपनी पत्नी तथा पुत्रों को रुस्तम जी की गाड़ी में सकुशल पहुँचा दिया था। जब गांधी जी भीड़ में घिर गए, तब उन पर पत्थर और सड़े अंडे बरसने लगे। किसी ने उनकी पगड़ी छीनी, किसी ने लातें मारी; किसी ने कोड़े मारे, किसी ने घूँसे और मुक्कों से पीटा। गांधी जी ने किसी पर हाथ नहीं उठाया। वे बेसुध होकर गिरने ही वाले थे कि इतने में पुलिस सुपरिंटेंडेंट अलेक्जैंडर की पत्नी उनके पास पहुँच गईं और उनके सिर पर छाता तानकर खड़ी हो गईं। उसी समय पुलिस की एक टुकड़ी उनकी रक्षा के लिए आ गई। पुलिस सुपरिंटेंडेंट ने उन्हें पुलिस थाने में ठहरने को कहा, परन्तु गांधी ने ठहरने से इंकार कर दिया। उन्हें जनता की बुद्धि पर विश्वास था। उन्होंने कहा, ''जब भी उन्हें गलती समझ में आएगी वे अपने कृत्य के लिए स्वयं लज्जित होंगे।'' उनकी इच्छा के अनुसार पुलिस ने उन्हें रुस्तम जी के घर पहुँचा दिया। वहाँ भी गोरों की भीड़ जमा हो गई। ''गांधी कहाँ है, उसको निकालो'' की आवाज़ें सुनाई देने लगीं, तब पुलिस ने गांधी जी को समझाया कि आप मित्र के मकान से छद्म वेश में निकल जाइए, अन्यथा भीड़ मकान को जला देगी । मित्र के मकान की रक्षा को ध्यान में रखकर गांधी जी पुलिस कांस्टेबल के वेश में छिपकर निकल गये। दो जासूस भी उनके साथ हो लिए।

जब तक गांधी जी सुरक्षित स्थान पर नहीं पहुँचा दिए गए, तब तक पुलिस सुपरिंटेंडेंट भीड़ को नियंत्रित किए रहा। अंत में उसने मकान की तलाशी का अभिनय किया और बाहर आकर भीड़ से कहा कि तुम्हारा शिकार तो निकल गया। जब भीड़ को यह विश्वास हो गया कि काला बैरिस्टर वहाँ नहीं है, तब वह हो–हो–हो करती हुई तितर–बितर हो गई। पुलिस उपद्रवियों पर मुकदमा चलाना चाहती थी, परन्तु गांधी जी राजी नहीं हुए।

समाचार पत्रों में गोरों की असभ्यता और उद्दंडता की कड़ी आलोचना की गई। डर्बन के बहुत–से गोरे लज्जित हुए क्योंकि जिन कारणों से वे गांधी जी से क्रुद्ध थे, उनके लिए वे बिल्कुल जिम्मेदार नहीं थे ।

गांधी जी ने अब नैटाल काँग्रेस का कार्य हाथ में लेने का निश्चय किया। साथ ही वे कुछ लोक सेवा भी करना चाहते थे। उन्हें बीमारों की तीमारदारी में बहुत सुख मिलता था। इसलिए वे मिशन अस्पताल में कुछ समय इसी कार्य में देने लगे। वे अपना सब काम स्वयं करने लगे। उन्होंने भोजन बनाना सीख लिया, कपड़ा धोना भी सीख लिया और कपड़े स्वयं धोने लगे। यद्यपि उनके लड़के अँग्रेजी ढँग से रहते थे फिर भी उन्हें वे अँग्रेजी के मिशन स्कूल में पढ़ाने के पक्ष में नहीं थे। अतः उन्हें घर पर ही पढ़ाने का प्रबंध किया गया।

गांधी जी में सेवा भावना प्रबल थी, इसका प्रमाण बोअर युद्ध में सभी को मिल चुका था। युद्ध समाप्ति, के बाद उन्होंने रोगियों की प्राकृतिक चिकित्सा करनी प्रारंभ कर दी। कुछ ऐसी घटनाएँ भी हुईं, जिनके कारण लोग आश्चर्य करने लगे और गांधी जी में विशेष रूप में परमात्मा की शक्ति देखने लगे। एक मरणासन्न लड़की की गांधी जी ने चिकित्सा की। जब वह अच्छी हो गई तो लोगों ने उन्हें जादूगर समझ लिया। गांधी जी ने लोगों को समझाया – "न मैं कोई जादूगर हूँ और न कोई महात्मा । लड़की को मैंने एनीमा दिया था। इससे उसके शरीर का विकार निकल गया और वह अच्छी हो गई।

गांधी जी एनीमा, टब स्नान, मिट्टी की पट्टी, संतुलित भोजन और उपवास आदि के द्वारा रोगियों की चिकित्सा करते थे।

बोअर–युद्ध की समाप्ति पर कुछ समय उन्होंने रोगियों की सेवा की और फिर भारत लौटने की इच्छा प्रकट की। प्रवासी भारतीयों ने बड़ी अनिच्छा से उन्हें जाने की अनुमति दी और उनसे यह वचन लिया कि जब उन्हें आवश्यकता होगी, वे उनकी सहायता के लिए अफ्रीका पुनः लौट आएँगे।

प्रवासी भारतीयों ने विदाई के अवसर पर गांधी जी को अनेक प्रकार के उपहार भेंट किए। उनमें कस्तूरबा के लिए हीरे का एक हार भी था। गांधी जी उपहारों को ग्रहण करने के पक्ष में नहीं थे। उन्होंने जो उपहार प्राप्त किए, उन्हें बैंक में रख दिया और उसका एक न्यास (ट्रस्ट) बना दिया। कस्तूरबा पहले हीरे का हार देने के लिए राजी नहीं हुईं थीं, क्योंकि वह गांधी जी को नहीं, उन्हें प्रदान किया गया था। गांधी जी ने कस्तूर बा के तर्क को स्वीकार नहीं किया और उनका बहुमूल्य हार भी उन्होंने बैंक में रख दिया और बैंक में रखे हुए धन का सार्वजनिक कार्य में उपयोग करने की न्यास द्वारा व्यवस्था कर दी ।

अभ्यास

1. गांधीजी को दूसरी बार अफ्रीका क्यों जाना पड़ा ?
2. गोरों ने गांधी जी को डर्बन बंदरगाह पर उतरने से क्यों रोका ?
3. गोरे इस कार्य में कहाँ तक सफल हुए ?